Approved by UGC
Journal No. : 63580
Regd. No. 21747

Indexed : IIJIF, I2OR & SJIF
I2OR Impact Factor : 6.650
ISSN 2277-2014

Research Discourse

An International Peer-reviewed Refereed Research Journal

Vol. XI No. IV October-December 2021

Editor
Dr. Anish Kumar Verma

Associate Editors
Dr. Rakesh Kumar Maurya
Dr. Purusottam Lal Vijay
Romee Maurya
Ashok Ram

International Innovative Journal Impact Factor (IIJIF)

I2OR

Scientific Journal Impact Factor

INDEX

स्वजागरण और प्रसाद के नाटक 1–2
डॉ0 अंजू सिहार
लोकतांत्रिक स्वराज्य के प्रतिवाह : बाल गंगाधर तिलक 3–5
डॉ0 अतुल गुप्ता
ग्वालियर नगर निगम के विकास का स्वरूप : एक अध्ययन 6–8
डॉ0 बबीता बाथम
जनसंख्या वृद्धि का कृषि के विकास पर प्रभाव (रोहतास जिला) के संदर्भ में 9–10
रुना नाज
वृद्धावस्था एक समस्या एवं प्रस्थिति : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण 11–12
डॉ0 दयाशंकर
रोहतास जिला में ग्रामीण बस्तियों के उत्पति एवं विकास : एक भौगोलिक अध्ययन 13–15
रवि शंकर राम
वैश्वीकरण के दौर में आने वाली चुनौतियां..... 16–18
डॉ0 अनिल कुमार एव डॉ0 योगेश कुमार मिश्रा
कृषि उद्योगों के विकास में नाबार्ड की भूमिका 19–21
डॉ0 महेश कुमार
बिहार के औद्योगिक विकास की बाधाएँ : एक समीक्षा 22–24
डॉ0 दीपनारायण यादव
जोत आकार एंव कृषि परिवर्तन एक भौगोलिक अध्ययन 25–26
अब्दुल कलाम एवं डॉ0 विरेन्द्र दुबे
समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्श 27–29
पूनम सिंह
नजीर अकबराबादी : एक मूल्यांकन 30–33
डॉ0 सुभाषचन्द्र गुप्त
'कार्य' का अवधाराणात्मक पक्ष : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 34–36
छाया वर्मा
नशीली दवाओं के प्रयोग करने की लत : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 37–39
डॉ0 धर्मेंद्र कुमार सोनकर
'धर्म' जीवन की एक विधि : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 40–41
डॉ0 सन्तोष कुमार सिंह
भारत में महिला सशक्तिकरण का परिदृश्य 42–44
डॉ0 चन्दन कुमार पाण्डेय
हिन्दी नवजागरण में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान 45–47
डॉ0 सुनील कुमार
शेख सलीम चिश्ती दरगाह का प्रबन्धन एवं कार्यशैली 48–49
यतेन्द्र सिंह
बुन्देली के विलुप्त होते शब्द एवं आगत शब्दों का अध्ययन 50–52
मोहन अहिरवार
पोषण में शिक्षा की भूमिका : समकालीन परिप्रेक्ष्य में 53–55
डॉ0 पूनम
मूकस् (MOOCs) के क्षेत्र में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान कर्मियों की भूमिका एवं महत्व 56–58
मनीष कुमार सिंह
धर्म का सामाजिक महत्व : एक समाजशास्त्रीय मूल्यांकन 59–61
डॉ0 छविनाथ प्रसाद
भोजपुर जिला में विकलांगता की समस्या के सामाधान के उपाय : एक भौगोलिक अध्ययन 62–64
सुदीप कुमार एवं डॉ0 मो0 नजीर अख्तर
बौद्ध धर्म के पूजनीय वृक्ष व उनका महत्व 65–66
डॉ0 चयनिका श्रीवास्तव

Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Peer-reviewed Refereed Research Journal, **Pub. by :** SARDI, Vns, U.P. (INDIA)
Indexed by : IIJIF, I2OR, SJIF, **I2OR Impact Factor :** 6.650, Vol . XI, No. IV, **OCT. – DEC. 2021,** Page No. : 30-33

नजीर अकबराबादी : एक मूल्यांकन

डॉ0 सुभाषचन्द्र गुप्त*
*हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखण्ड

सारांश : नजीर की दृष्टि कबीरधर्मा है जिसमें जातिगत, सम्प्रदायगत, धर्मगत, समाजगत संकीर्णताओं के लिए कोई जगह नहीं है। मनुष्य को मनुष्यता का, समाज को सामाजिकता का और दुनिया को भाइचारे का पैगाम है उनका रचना–संसार। उनकी रचनाएँ एक ओर वर्ग–विभाजित समाज की तसवीर पेश करती हैं तो दूसरी ओर मनुष्य को सिर्फ मनुष्य के रूप में देखने–समझने की उदात्त दृष्टि देती हैं।

मुख्य शब्द : इलाही, आशिक, बस्फ, मकसूद, मुराद आदि।

साझी संस्कृति यदि भारतीयता की पहचान है, तो इस पहचान को विस्तार एवं मजबूती प्रदान करनेवाले उर्दू के प्रतिनिधि कवियों में एक महत्वपूर्ण नाम है–नजीर अकबराबादी। सही मायने में, वे जितने उर्दू के हैं, उतने ही हिन्दी के भी। भाषा की दृष्टि से वे उर्दू के है, लेकिन उनकी कविताओं में जो व्यापक सरोकार है, वे संपूर्ण भारतीय समाज से जुड़े सरोकार हैं। वस्तुतः नजीर का महत्व जितना समाज व देश के संदर्भ में है, उतना ही साहित्य के संदर्भ में भी। नजीर मूलतः अरबी का शब्द है और इसका अर्थ है–उदाहरण, दृष्टांत, मिसाल आदि। उनका जीवन और साहित्य दोनों ही प्रेरणावाही है, चेतनावाही है। अपने समय एवं समाज की चिन्ताओं को उन्होंने अपनी कविताओं के केन्द्र में रख, लोगों में एक स्वस्थ एवं मानवोचित चेतना विकसित करने का प्रयास किया है। इस तरह उनका नाम ही उनके रचनात्मक सरोकार का पर्याय बन गया है।

मध्यकालीन दरबारी संस्कृति वाले दौर में नजीर अकबराबादी राजसत्ता के साथ नहीं, जनता के साथ, खड़े होते हैं। उन्हें अवध (उत्तरप्रदेश) और भरतपुर (राजस्थान) के राजदरबारों से आमंत्रण मिला था, जिन्हें उन्होंने नामंजूर कर दिया था। उन्हें न ता आगरा छोड़ना मंजूर था और न दरबारी कवि बनकर राजसत्ता का चरण–गान करना। ऊपरी तौर पर यह एक साधारण–सी घटना लगती है, लेकिन वास्तव में यह घटना एक ओर उनकी अगाध प्रतिभा और लोकप्रियता को उजागर करती है और दूसरी ओर उनके निर्भीक व्यक्तित्व तथा जनता का सच्चा कवि होने का परिचय देती है। उन्होंने 95 वर्ष का लम्बा जीवन पाया था और इस दीर्घजीवन को सूफी संतों की तरह निर्विकार और अनासक्त रूप में जीया। वे जितने सहज इंसान थे, उतने ही सहज कवि भी। सहजता, सादगी और जन–सरोकार उनके व्यक्तित्व के अभिन्न अवयव हैं।

1735 में दिल्ली में जन्में नजीर की कर्मभूमि और रचनाभूमि आगरा रही। आगरा का एक नाम 'अकबराबाद' भी है। आगरा की मिट्टी से उन्हें इतना लगाव रहा कि उन्होंने अपना उपनाम ही 'अकबराबादी' रख लिया। यह वही आगरा है जो मुगल बादशाहों की राजधानी रही है, जहाँ स्थापत्य कला का अनुपम सौंदर्य 'ताजमहल' गर्वोन्नत खड़ा है और जिसके पड़ोस में मथुरा और वृन्दावन जैसे शहर हैं जहाँ के कण–कण में कृष्णभक्ति का पावन स्वर अहर्निश अनुगूंजित है। इसीलिए आगरा और इसके आसपास की सांस्कृतिक सुगंध प्राणवायु की तरह नजीर की चेतना में रची–बसी है–**''आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है/मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है/मुफलिस कहो, फकीर कहो, आगरे का है/शायर कहो, नजीर कहो, आगरे का है।''**

बुनियादी रूप से नजीर साझी संस्कृति के कवि हैं। सांस्कृतिक सदभावना उनकी कविताओं का केन्द्रीय विषय है। यही कारण है कि उनके यहाँ इस्लाम के प्रति गहरी निष्ठा का स्वर है, तो हिन्दू–संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा का भाव भी है। वे जिस भावनात्मक तन्मयता के साथ हजरत अली साहब की चर्चा करते हैं, उसी हार्दिकता के साथ राम, कृष्ण, शिव, गणेश, लक्ष्मी, दुर्गा आदि हिन्दू–धर्म से जुड़े देवी देवताओं की भी चर्चा करते हैं। उनके यहाँ ईद, शब–ए–बरात आदि का उल्लेख मिलता है, तो होली, दीवाली, रक्षाबंधन जैसे हिन्दू–पर्वों के साथ–साथ भारतीय समाज के रीति–रिवाजों तथा संस्कार–उत्सवों की महत्ता का विवेचन भी है। शंकर का ब्याह, जन्म कन्हैया, हरि की तारीफ, दुर्गा–स्तुति, सुदामा चरित्र आदि रचनाएँ सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक धर्म आदरणीय एवं अनुकरणीय है– यही चेतना नजीर की कविताओं की प्राणधारा है और यही चेतना 'सर्वधर्म समभाव' के लिए ठोस जमीन तैयार करती है। नजीर का रचनात्मक अभीष्ट ही है सर्वधर्म समभाव की सांस्कृतिक चेतना का फैलाव। इसीलिए वे एक ओर इस्लाम की अवधारणा के अनुरूप परमशक्ति की चर्चा करते हुए अपने अभाव, अपनी गरीबी एवं अपनी बेबसी को सामने रखते हैं–**''इलाही तू सत्तारो गफार है/मेरा याँ गुनाहों का अम्बार है/न हामी, न कोई मददगार है/अब इस बेबसी में तू ही यार है।''** तो दूसरी ओर हिन्दूधर्म के अनुसार ईश्वर के सगुण रूप का चित्रण करत हैं–**''मैं क्या–क्या बस्फ कहूँ यारों/उस श्याम बरन अवतारी के/किशन कन्हैया मुरलीधर/मनमोहन कुंज बिहारी के/हर आन दिखाएँ रूप नये/हर लीला न्यारी–न्यारी के/पत लाज रखैया दुखभंजन/हर भगति भगत अधारी के।''** इसके साथ ही समय–समय पर समाज को आध्यात्मिक संदेश देनेवाल संतों–महापुरूषों के प्रति भी नजीर अपनी श्रद्धा निवेदित करते हैं–**''है कहते नानकशाह जिन्हें/वह पूरे हैं आगाह गुरू/वह कामिल रहबर जग में हैं/यूँ रौशन जैसे माहगुरू/मकसूद, मुराद, उम्मीद सभी/बर लाते हैं दिन ख्वाह गुरू/नित लुत्फें करम से करते हैं/हम सबको निरवाह गुरू/सब शीश नबा अरदास करो/और हरदम बोलो वाहे गुरू।''** इस तरह नजीर की रचनाओं में एक व्यापक